उपसंहार

हिंदी सिनेमा या यूं कहें कि भारतीय सिनेमा के बेहद ही प्रतिभाशील फिल्म निर्देशक राम गोपाल वर्मा सिनेमा के क्षेत्र में एक ऐसे प्रयोगशाला हैं, जो हमेशा कुछ नई चीजों का निर्माण करते रहते हैं। राम गोपाल वर्मा ने- साइकोलॉजिकल थ्रिलर्स, रोड मूवीज़, हॉरर मूवीज़, फिक्शनल मूवीज़, एक्सपेरिमेंटल मूवीज़, म्यूजिकल मूवीज़, इरोटीक मूवीज़, पॉलिटिकल ड्रामा और डोक्यूड्रामा जैसी अनेकों जॉनर की फिल्मों का ना सिर्फ निर्देशन किया है बल्कि साथ ही साथ लेखन और निर्माण भी किया है।

राम गोपाल वर्मा एक ऐसे शख़्स का नाम है जो बिना किसी दबाव के जॉनर रूपी दायरे को तोड़ने का साहस रखता है। ये शायद भारत के इकलौते ऐसे फिल्म निर्देशक हैं जिन्होनें अकेले इतने विभिन्न जॉनर की फिल्मों का निर्देशन किया है। ये भारतीय फिल्म इंडस्ट्री में एक ऐसे नाम हैं जो फिल्मों का निर्माण बॉक्स ऑफिस कलेक्शन को बिना ध्यान दिये करते हैं। फिल्म निर्माण के संदर्भ में इनका सोच है कि – "अलग तरह की दिखने वाली कहानी को फिल्म के माध्यम से ज़रूर कहा जाना चाहिए।"

राम गोपाल वर्मा शायद भारतीय सिनेमा के सबसे ज़्यादा विवादित फिल्म निर्देशक होंगे, इसमें कोई संदेह नहीं हो सकता। इन सबके बावजूद अगर आज के दौर में हिंदी में बन रही कुछ अच्छी सार्थक फिल्मों की बात किया जाय तो इसके पीछे राम गोपाल वर्मा के कार्य और प्रायस को नहीं भुलाया जा सकता है। हिंदी सिनेमा में इसकी शुरुआत 1990 में ही इन्होनें फिल्म शिवा के द्वारा किया था। हिंदी सिनेमा का यह चलन है कि कुछेक अच्छी फिल्मों का निर्देशन कर कोई एक स्थापित और सफल निर्देशकों की श्रेणी में गिने जाने लगता है और फिर वह निर्देशक संतुष्ट हो जाता है। राम गोपाल वर्मा जिन्होनें सत्या,कंपनी,सरकार,सरकार राज और रक्त चरित्र जैसी महत्वपूर्ण फिल्मों का निर्माण करनें के बावजूद आज भी कुछ नया करनें की ललक में लगातार प्रयोगवादी फिल्मों का निर्देशन किए जा रहे हैं। इनका प्रयोग कई स्तर पर सफल भी रहा है, जिसे आगे चलकर अनेकों निर्देशकों ने अपनाया भी है।

इन्होनें सिनेमा के लगभग हर एक क्षेत्र में जमकर प्रयोग किया है और फिल्म निर्माण की अपनी एक अलग ही शैली का निर्माण किया है। हिंदी सिनेमा में राम गोपाल वर्मा ने जिस समय अपनी पहली फिल्म का निर्देशन किया उस समय हिंदी सिनेमा जैसे एक जड़ की स्थिति में थी। एक जैसी भाषा,कथ्य,और तकनीक आधारित फिल्मों का निर्माण किया जा रहा था। इनकी पहली ही फिल्म में भाषा,कथ्य,और तकनीक में बहुत कुछ नया देखने को मिला। ऐसा नहीं है कि यह नयापन सिर्फ इनकी इसी फिल्म सिमट कर रह गया, बल्कि इनका प्रयोग हर एक फिल्म के साथ बढ़ता ही चला गया।

इनकी इस प्रयोगवादी शैली की वजह से इनकी आगे की फिल्मों में एक नयापन दिखने लगा और इनकी फिल्में निखरती ही चली गईं और इन्होनें फिल्म निर्माण की अपनी एक अलग शैली का निर्माण कर लिया।

बात अगर कथ्य या कहानी की स्तर पर करें तो जब-जब इन्होनें किसी फिल्म का निर्माण किया तब तात्कालिक समय में बन रही फिल्मों से हटकर कहानी का चुनाव किया। हिंदी सिनेमा में यह चलन आज भी है कि यदि किसी एक जॉनर या विषय की फिल्म हिट हो जाए तो उसी तरह की फिल्मों की बाढ़ सी लग जाती है। राम गोपाल वर्मा हमेशा समय सापेक्ष लीक से हटकर मुद्दे या कहानियों को अपनी फिल्मों में स्थान देते रहते हैं। इनकी फिल्में ऐसी बातें करतीं हैं जो सीधे तौर पर आमजन के बीच की हो तथा उन्हीं की घटनाओं व समस्याओं को दिखाएँ। ये कहीं ना कहीं अपनी कहानियों से सिस्टम को भी जोड़ लेते हैं तथा मुख्य मुद्दे के केंद्र में मध्यवर्गीय समाज को प्रमुख्ता से स्थान देते हैं। इनका किसी घटना या मुद्दे को देखने का नज़रिया बिलकुल ही अलग होता है। ये किसी घटना या कहानी के उस पहलू को पकड़ते हैं जिसकी ओर अमूमन किसी का ध्यान नहीं जाता है। अंडरवर्ल्ड को अपनी फिल्म का विषय बनाने वाले राम गोपाल वर्मा से भी पहले कई निर्देशकों द्वारा इसी विषय पर और भी अनेकों फिल्मों का निर्माण किया जा चुका है। राम गोपाल वर्मा ने सत्या और कंपनी द्वारा अंडरवर्ल्ड में काम करने वालों की शक्ति और साम्राज्य दिखने की बजाय उसमें कार्य करने वालों की जीवन, जीवन शैली और उनके कार्यों को दिखाया है। ये कहानी का चुनाव जिस तरीके से करते हैं और फिर जब पर्दे पर दिखाते हैं तो यह फिल्म के रूप में पर्दे पर आकार एक ताज़गी का एहसास करवाती है और दर्शकों को कुछ नया मिलता है।

ये पर्दे पर किसी घटना,कहानी या किसी फिल्म को कुछ अलग और प्रभावी तरीके से दिखाने के लिए लगातार प्रयोग करते रहते हैं। ये अपनी फिल्मों में लिनियर नैरेशन का प्रयोग करते हैं। कोई दृश्य धीमा ना पड़ जाए इसलिए वॉइस-ओवर की सहायता लेते हैं। ये जिस अलग-अलग तरीके से पर्दे पर कहानी को प्रस्तुत करते हैं, वह फिल्म के भाव को और भी बढ़ा देता है।

संवाद लेखन के संदर्भ में बात करें तो इनकी फिल्मों को देखकर हम पाते हैं, कि ये कम से कम संवादों का प्रयोग करते हैं जिससे फिल्म बोझिल नहीं हो पाती। कम संवादों के प्रयोग से हर एक बात बड़े आसानी से संप्रेषित होती जाती है। ये सरल शब्दों और छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग करते हैं। इससे अभिनेता/अभिनेत्रियों द्वारा बोली जाने वाली एक-एक बात स्पष्ट रूप से समझ में आती है। पात्रों द्वारा

बोले जाने वाले संवादों में नाटकीयता बहुत ही कम रहती है, अर्थात संवाद आदायगी अमूमन यथार्थवादी शैली में ही किया जाता है।

राम गोपाल वर्मा के फिल्मों में अभिनय के संदर्भ में अगर कुछ पात्रों को छोड़ दें तो बाकी सभी की अभिनय शैली बेहद यथार्थवादी लगता है। इनके सारे पात्र बेहद ही सहज भाव से अपना कार्य व्यापार करते हैं। अर्थात इनकी फिल्मों में अभिनय की बात किया जाए तो हम पाते हैं ये कहानी को भावपूर्ण बनाने के लिए अभिनय में वास्तविकता के साथ, कभी-कभी नाटकीयता का भी प्रयोग करते हैं। हिंदी सिनेमा में सबसे अधिक प्रयोग करने वाले राम गोपाल वर्मा का प्रयोग सेट डिजाइनिंग में भी दिखता है, जो काफी प्रभावी और सार्थक लगता है। पूरे फ्रेम में कहीं भी ये बेवजह की किसी भी तत्व का प्रयोग नहीं करते हैं, उसका संबंध तार्किक रूप से उस दृश्य से होता है। सेट पूरी तरह से वास्तविक और आम समाज के बीच का लगता है, पूरे फ्रेम में ऐसी ही चीज़ें दिखती हैं जिसे हम अपने दैनिक जीवन में देखते रहते हैं।

लोकेशन चुनाव में भी इनकी पूरी कोशिश वास्तविकता के जितनें नजदीक हो सके पहुँचना होता है। ये कभी भी लोकेशन का चुनाव या सेट डिजाइनिंग सिर्फ सुंदर दिखने के लिए नहीं करते। यानी सामान्य जीवन को ही पर्दे पर दिखाने का प्रयास रहता है। वेश-भूषा के मामले में भी सुंदरता को दरकिनार कर वास्तविकता को ही तवज्जो देते हैं। चरित्रों का वेश-भूषा और मेक-अप इस तरह से किए जाते हैं कि सिर्फ पात्रों को देखकर ही उसकी सामाजिक, राजनीतिक, और आर्थिक स्थिति के बारे में बड़े आसानी से बताया जा सके। राम गोपाल वर्मा सबसे अधिक प्रयोग तकनीकी स्तर पर करते हैं। कैमरे की ब्लॉकिंग से लेकर मूवमेंट तक ये जमकर प्रयोग करते हैं। जिस तरह से पार्श्व-ध्वनि का प्रयोग अन्य फिल्म निर्देशक दृश्य के भाव तथा वातावरण का निर्माण करने के लिए करते हैं, उसी तरह ये काम राम गोपाल वर्मा कैमरे द्वारा करते हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो ये अपने कैमरे से भी अभिनय करवाते हैं। शूटिंग के लिए ये नेचुरल व कृत्रिम दोनों तरह के प्रकाश का प्रयोग करते हैं। वैसे तो समान्य क्षणों को ये हाई-कि लाइट में शूट करते हैं। लेकिन एक चीज़ जो इनकी लगभग सभी फिल्मों में देखने को मिलती है वो यह कि ये तनाव भरे क्षण को और महत्वपूर्ण बनाने के लिए दृश्य विशेष को लो-कि लाइट में शूट करते हैं। प्रकाश का इस तरीके से प्रयोग करने से फिल्म देखने वालों का सारा ध्यान उस दृश्य-विशेष के भाव के साथ पूरी तरह बंध जाता है।

अतः संक्षेप में हम कह सकते हैं कि राम गोपाल वर्मा ने अपने प्रयोगवादी सिद्धांत को अपनाकर फिल्म बनाने कि अपनी खुद की एक शैली का निर्माण तो किया ही है साथ ही इन्होनें प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से भारतीय सिनेमा के युवा निर्देशकों का मार्गदर्शन करते हुए भारतीय सिनेमा को सम्बृद्ध भी किया है। अंत में हमें राम गोपाल वर्मा से एक उम्मीद है कि ये आगे भी हर नई फिल्म द्वारा प्रयोग कर भारतीय सिनेमा को सम्बृद्ध करते रहेंगे।